POLITICAL SCIENCE Dep.
B.A. Part-I (Hons), Paper-II

Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur,
Samastipur

अरविंदो घोष

अरविंदो घोष का जन्म 1872 ई में कलकत्ता में हुआ था। वह भारतीय राष्ट्रवाद के अग्रदूत थे। अरविंदो डाक्टर कृष्णधन घोष और स्वर्णलता देवी के तीसरे पुत्र थे। उनकी शिक्षा दूरे अंग्रेजी वातावरण में प्रारंभ हुई। उन्हें पढ़ने के लिए इंग्लैंड भेजा गया। इंग्लैंड में प्रवास के दौरान ही अरविंदो के मन में भारत एवं भारतीय संस्कृति के प्रति एक रहस्यमय विश्वास रहता था।

अरविंदो ने आई. सी. एस. की लिखित परीक्षा पास कर ली लेकिन उन्होंने जानबूझकर घुड़सवारी की परीक्षा छोड़ दी। उन्होंने आई. सी. एस. की परीक्षा इसलिए उत्तीर्ण की कि उनके पिता की यह इच्छा थी। 1892 में वह भारतीय स्वतंत्रता के लिए प्रयास करनेवाली एक क्रांतिकारी गुप्त संस्था में शामिल हुए। अरविंदो इसके सक्रिय सदस्य बने।

1893 ई० में इंग्लैंड में बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ से इनकी भेंट हुई महाराजा ने बड़ौदा राज्य की सेवा के लिए उन्हें चुन लिया। स्वदेश लौटकर वह बड़ौदा रियासत की

Scanned with CamScanner

सेवा में वह लग गए। बड़ौदा में रहते हुए उन्होंने संस्कृत और बंगाली साहित्य का भी अध्ययन किया।

1898-99 से ही अरविंदो भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में लग गए। 1902 तथा 1905 के बीच अनेक बार बंगाल की यात्रा करके युवकों एवं राष्ट्रवादियों को संबोधित किया। युवियों में बंगाल आकर अरविन्दो क्रांतिकारी आंदोलन को गतिशील बनाते थे। उनके नेतृत्व में भारत की स्वतंत्रता के लिए ब्रिटिश सत्ता से लोहा लेने के लिए नवयुवकों की एक बड़ी संख्या तैयार होने लगी।

1908 ई० में सरकार ने अलीपुर षड्यंत्र से संबंधित मामले में अरविंदो को गिरफ्तार कर लिया। एक साल बाद उन्हें अलीपुर जेल से रिहा किया गया। जेल की अवधि के दौरान उनके जीवन दर्शन में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। वह अध्यात्म की तरफ मुड़ गए। 1910 में वह पांडिचेरि चले गए। वहां पर वह अध्यात्म और दर्शन में लीन हो गए। पांडिचेरि में उन्होंने अरविंदो आश्रम की स्थापना की। उन्होंने 'लाइफ डिवाइन', 'सिन्थेसिस ऑफ योगा' आदि पुस्तकों की रचना की। 1950 ई० में इस महापुरुष का निधन हो गया।

Dr. [illegible]
Asst. Professor

Scanned with CamScanner